School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य में चित्रित यथार्थवाद : एक अनुशीलन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in HINDI under School of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022-23.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Ruchi Bajpai and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Jyoti gupta
En. No.- 2101301

Research Supervisor:-

Prof. Ruchi Bajpai (Faculty of HINDI)

Prof. Satyapal Tiwari (Director of School of Humanities)

Prof. P. K. Pandey (Director, R&D Cell)

"मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य में चित्रित यथार्थवाद : एक अनुशीलन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI
to
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Jyoti Gupta
En. No.- 2101301

Under the Supervision of
Prof. Ruchi Bajpai
Faculty of Hindi

School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipurm, (Sector —F) Phaphamau, Prayagraj — 211021

ज्योति गुप्ता

ABSTRACT :-

बहुआयामी प्रतिभा की धनी मन्नू भंडारी जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अपने समय के यथार्थ को सटीक तरीके से व्यक्त किया है। यथार्थ जीवन की सच्ची अनुभूति है। जिसमें हम अपने जीवन में घटित होने वाले राग–विराग, सुख–दुख और अन्य भावनाओं का अनुभव करते हैं। अपनी इंद्रियों के द्वारा समाज में होने वाले सभी प्रकार के क्रियाकलापों का अनुभव करना ही यथार्थ है। यथार्थ की अनुभूति के कारण ही हर लेखक का अपना–अपना अनुभव, ज्ञान और दृष्टिकोण होता है । इन सभी अनुभवों, ज्ञान और दृष्टिकोणों को वह सैद्धांतिक विचारधारा पर कसता है। साहित्य में वास्तविकता के रूप में अभिव्यक्त स्वरूप ही यथार्थ है। रचनाकार अपनी रचना में समाज के दोनों पहलुओं को अच्छा–बुरा, सुंदर–कुरूप, प्रेम–ईर्ष्या, रीति– कुरीति इत्यादि के रंग के मिश्रण को प्रस्तुत कर समाज को एक नवीन दृष्टि प्रदान करता है। मन्नूजी ने अपने उपन्यास साहित्य में यथार्थ का प्रस्तुतीकरण, अपने जीवन और आस–पास की स्थितियों और समस्याओं से प्रभावित होकर प्रस्तुत किया है, जिसे पात्रों और कथा–रचना के अन्य उपादानों ने जीवंत और विश्वसनीय बनाया है। वस्तुतः मन्नू जी के उपन्यास साहित्य में व्यक्त राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक यथार्थ जीवंत रूप में चित्रित हुए हैं। जिन्होंने हिंदी उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की है।

Keyword:- यथार्थवाद, महाभोज, सामाजिक ,राजनीति, मनोविश्लेषणवाद, कालजयी, अवसरवादी, भ्रष्टाचार, मनोविज्ञान, नैतिक मूल्य।

ज्योति गुप्ता

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	5-6
2	Literature Review	7
3	Description Broad Area	8
4	Objectives of the Study	8
5	Research Methodology	8
6	Expected Outcome of the Research	9
References		9-11
Plagiarism Report		

ज्योति गुप्ता

1· Introduction :—

प्रसिद्ध कथाकार मन्नू भंडारी जी का औपन्यासिक कृतित्व हिंदी कथा–साहित्य की अमूल्य निधि है। उन्होंने यथार्थ के विविध रूपों को अपने जीवन और समाज में व्याप्त समस्याओं से चुनकर अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से पूर्ण सजकता के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने रचनात्मक अनुभवों के अभिनिवेश द्वारा अपने उपन्यासों में ऐसे जीवंत पात्रों का सृजन किया है जो गंभीर सामाजिक चिंतन को हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं और हमें सोचने पर मजबूर करते हैं। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक आदि सभी दृष्टिकोणों से मन्नू जी का रचनात्मक चिंतन उनके सभी उपन्यासों में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र में मन्नू जी के उपन्यासों में निहित यथार्थवादी चिंतन का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

'यथार्थवाद' शब्द अंग्रेजी के **'Realism'** का हिंदी अनुवाद है, जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन भाषा की **'Res'** धातु से हुई है। जिसका तात्पर्य है–'वस्तु' इस प्रकार **'Realism'** का हिंदी अनुवाद हुआ–'वस्तुवाद'। कई विद्वानों का मानना है कि यथार्थवादी साहित्य में समाज का यथावत् चित्रण किया जाता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार यथार्थवाद की परिभाषा इस तरह से है–''यथार्थवाद का मूल सिद्धांत है वस्तु को उसके यथार्थ रूप में चित्रित करना, न तो उसको कल्पना के विचित्र रंगों से अनुरंजित करना और न किसी धार्मिक या नैतिक आदर्श के लिए उसे काट–छांट कर उपस्थित करना।'' इस तरह कह सकते हैं की यथार्थवाद का अर्थ साहित्य में एक साहित्यकार का बिना किसी भय और पक्षपात के समाज में जो कुछ भी घटित हो रहा है उसे अपने अनुभवों के आधार पर यथावत् चित्रण करना ही यथार्थवाद है। यथार्थ की अनुभूति के कारण ही हर साहित्यकार का अपना–अपना अनुभव, ज्ञान और दृष्टिकोण होता है। इन सभी अनुभवों, ज्ञान और दृष्टिकोणों को वह सैद्धांतिक विचारधारा पर कसता है। साहित्य में वास्तविकता के रूप में अभिव्यक्त स्वरूप ही यथार्थ है।

ज्योति गुप्ता

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में देखें तो कबीर अपने व्यंग्य परक दोहों के माध्यम से समाज को यथार्थ परक सुधारक दृष्टि प्रदान करने का प्रयास करते हैं। वही प्रेमचंद ने अपने समाज में हो रहे सामंती अत्याचारों तथा सामाजिक कुरीतियों को एक आदर्श निश्चित यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया है। वास्तव में उपन्यास की विधा की संरचना ही ऐसी होती है कि उसमें देश–काल, पात्र और घटना के माध्यम से यथार्थ का स्वाभाविक रूप से प्रकटीकरण हो जाता है। आधुनिक साहित्य में यथार्थ का प्रस्तुतीकरण एक सहज प्रक्रिया है ऐसी स्थिति में आधुनिक युग की सजग और संवेदनशील उपन्यासकार होने के नाते मन्नू जी के उपन्यास साहित्य में यथार्थ का विवेचन और विश्लेषण महत्वपूर्ण ढंग से किया गया है। आधुनिक युग में जटिल यथार्थ के चित्रण के लिए उपन्यास जैसी विधा ही उपयुक्त है। जीवन के तमाम जटिल से जटिल पक्षों का इसमें उद्‌घाटन संभव हो पाता है।

'महाभोज' की भूमिका का निम्नलिखित कथन मन्नू भंडारी के यथार्थवादी दृष्टिकोण का ही परिचायक है– ''मगर जब घर में आग लगी हो तो सिर्फ अपने अंतर्जगत में बने रहना या उसी का प्रकाशन करना क्या खुद ही अप्रासांगिक, हास्यास्पद और किसी हद तक अश्लील नहीं लगने लगता?.... इसे मैं अपने व्यक्तित्व और नियति को निर्धारित करने वाले परिवेश के प्रति ऋण–शोध के रूप में ही देखती हूं।'' लेखिका का उपर्युक्त कथन से आशय यह है कि यथार्थ के अंतर्गत अपने चारों ओर उपस्थित व्यापक जन–समाज की गहनता सच्चाइयों को उजागर करना कथाकार का पुनीत दायित्व है। जिस समाज से लेखक अपने व्यक्तित्व हेतु संदाय प्राप्त करता है, उस समाज को उसे कुछ देकर भी जाना होता है। स्वहित से बढ़कर सामाजिक हित की अवतारणा इसलिए लेखकीय यथार्थ की एक आंतरिक शर्त होनी चाहिए। वस्तुतः जीवन के हर पहलू को छूने वाली मन्नू जी के उपन्यास साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक यथार्थ स्पष्ट रूप से उभरा है।

2. Literature Review :-

ज्योति गुप्ता

[signature]

शोधार्थी ने विभिन्न अंतर्जालीय स्रोतों के माध्यम से पूर्व में हुए शोध कार्यों का अध्ययन किया। जिसका विवरण निम्नलिखित है–

- ❖ मन्नू भंडारी के कथा–साहित्य में नारी विमर्श, लतारंजन, अरुणाचल युनिवर्सिटी ऑफ स्टडीस नामसाई, अरुणाचल प्रदेश

- ❖ मन्नू भंडारी के गद्य साहित्य का मूल्यांकन, दीपिकाबहन वी. दवे, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र

- ❖ मन्नू भंडारी के साहित्य सृजन में नारी विमर्श का अध्ययन, वंदना राणा, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान 2020

- ❖ स्वातंर्त्योत्तर भारत में स्त्री विषयक यथार्थ एवं मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, प्रियंका, पंडित रवि शंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, 2016

- ❖ मन्नू भंडारी का साहित्य : वस्तु एवं शिल्पगत अध्ययन, जगविंदर जैन, मुंबई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र , 1986

ज्योति गुप्ता

3. Description Broad Area :-

मन्नू भंडारी जी के उपन्यास साहित्य में व्यक्त राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक यथार्थ जीवंत रूप में चित्रित हुए हैं, उसका आज भी विशेष महत्व है । शोधार्थी द्वारा मन्नू भंडारी जी के उपन्यासों में व्यक्त यथार्थवाद के विविध रूपों को रुपायित करके हिन्दी उपन्यास साहित्य की महत्ता और उपयोगिता को शोधात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

4. Objectives of the Study :-

मन्नू भंडारी जी के उपन्यासों में अभिव्यक्त यथार्थ को लेकर पुस्तकों में कम चर्चा हुई है। मन्नू जी ने बहुत कम संख्या में उपन्यास लिखे हैं किंतु उनका व्यापक आयाम है। वह समाज के यथार्थ चेतना का अपने उपन्यासों के माध्यम से उद्‌घाटन करती हैं। शोधार्थी द्वारा मन्नू भंडारी जी के व्यक्तित्व और यथार्थवाद का विवेचन करते हुए उनके उपन्यासों में निहित तत्कालीन यथार्थ का विश्लेषण वर्तमान संदर्भों से जोड़कर किया जाएगा तथा यथार्थ के तमाम पहलुओं यथा सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक इत्यादि पर नवीन संदर्भों को खोजने का प्रयास किया जाएगा।

5. Research Methodology :-

सामग्री संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया जाएगा तथा शोध कार्य में तार्किक विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक और वस्तुनिष्ठ पद्धति का प्रयोग किया जाएगा । इसके अलावा वर्गीकरण निष्कर्ष तथा अन्य संदर्भ आने पर तुलनात्मक पद्धति अपनाई जाएगी।

ज्योति गुप्ता

6. Expected Outcome of the Research :-

मन्नू भंडारी जी के उपन्यासों में आसपास के परिवेश में घट रही तत्कालीन घटनाओं यथा राजनीतिक विकृतियों, सामाजिक विकृतियों, आपसी तनाव, कुंठा, स्त्री के मन में चल रहे अंतर्द्वंदों एवं संघर्षों इत्यादि को बड़ी ईमानदारी के साथ यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है यदि वर्तमान समाज का गहराई से मूल्यांकन करें तो वही समस्याएं विकराल रूप धारण किए आज भी मौजूद हैं। यदि उनके उपन्यासों का यथार्थवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाए तो मन्नू जी का उपन्यास साहित्य समाज और साहित्य जगत को एक नई दिशा देने में सक्षम होगा।

References :-

मूल ग्रंथः—

- आपका बंटी, मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
- महाभोज, मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
- एक इंच मुस्कान, मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
- स्वामी, मन्नू भंडारी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
- कलवा, मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- एक कहानी यह भी, मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
- मेरी प्रिय कहानियां, मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

सहायक ग्रंथः—

- हिन्दी साहित्य का आदिकाल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिन्दी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली

ज्योति गुप्ता

❖ यथार्थवाद, शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

❖ आधुनिक कथा साहित्य में नारी : स्वरूप और प्रतिमा, डॉ. उमा शुक्ल, डॉ. माधुरी दीक्षित, अरविंद प्रकाशन, मुंबई

❖ आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिका, सुशीला मित्तल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

❖ कथाकार राजेंद्र यादव, चंद्रभानु सोनगड़े, लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली

❖ हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, त्रिभुवन सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

❖ कथाकार मन्नू भंडारी, अनिता राजूरकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

❖ काव्य के रूप, बाबू गुलाब राय, आत्माराम एंड संस, दिल्ली

❖ कलाम का सिपाही, अमित राय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

❖ उत्तर प्रदेश मासिक : जुलाई–सितंबर, 2022 (विशेषांक)

❖ हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, विश्वनाथ त्रिपाठी, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, दिल्ली

❖ आत्मकथा और उपन्यास, ज्ञानेंद्र कुमार संतोष, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

❖ मन्नू भंडारी और आपका बंटी, मालविका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

❖ हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

❖ समकालीन हिन्दी साहित्य विविध : परिदृश्य – रामस्वरूप चतुर्वेदी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

❖ समकालीन स्त्री साहित्य सामाजिक संवेदना और सरोकार, डॉ. किरण तिवारी, दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, ग्रेटर नोएडा

❖ हिंदी कथा साहित्य : एक दृष्टि – सत्यकेतु सांकृत राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

❖ साहित्यिक विमर्श के विविध प्रसंग, डॉ. किरण तिवारी, दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, ग्रेटर नोएडा

❖ हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

ज्योति गुप्ता

- ❖ उत्तर आधुनिकता और समकालीन कथा–साहित्य, लक्ष्मी गौतम, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- ❖ समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना, कल्पना वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- ❖ नई चेतना के आयाम, अलका प्रकाश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- ❖ भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, डॉक्टर सत्यदेव चौधरी और डॉक्टर शांतिस्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन, दिल्ली
- ❖ हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉक्टर नगेंद्र, मयूर पेपर बैग्स, नोएडा
- ❖ हिन्दी गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- ❖ मन्नू भंडारी का रचनात्मक अवदान, सुधा अरोड़ा, वंदना बुक एजेंसी, दिल्ली

अंतर्जालीय स्रोतः–

- ❖ Www.wikipedia.com
- ❖ Www.hindinet.com
- ❖ **https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/171180**
- ❖ **https://www.apnimaati.com/2024/03/blog-post_54.html**
- ❖ **https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/71321**
- ❖ **https://epustakalay.com/**
- ❖ **https://www.hindwi.org/ebooks**
- ❖ **https://ebook.pustak.org/?Ebook**

ज्योति गुप्ता

DrillBit

DrillBit Similarity Report

0	1	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication

ज्योति गुप्ता

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Jyoti Gupta
Title	मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य में चित्रित यथार्थवाद एक अनुशीलन
Paper/Submission ID	3632177
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-19 11:52:40
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

ज्योति गुप्ता